भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वर्ष-18 अंक-10 वि. स. 2079 युगाब्द 5124 दिसंबर-2022 वार्षिक चंदा 200/- मूल्य प्रति - 20/-

सदस्यता शुल्क : 12 वर्षीय चंदा - रू 2000/- संरक्षक सहयोग राशि - रू 5000/-

मार्गदर्शक :

- डॉ कृष्णगोपाल
  संस्थापक न्यासी
- श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'
  संस्थापक न्यासी
- श्री ओमप्रकाश गोयल
  अध्यक्ष
- श्री राहुल सिंह
  सचिव/प्रबंध न्यासी

सम्पादक :

- डॉ शिवभूषण त्रिपाठी

सह-सम्पादक :

- राजेश

मुद्रक एवं प्रकाशक :

- जितेन्द्र कुमार अग्रवाल

प्रबंधक :

- विजय अग्रवाल

केन्द्रीय कार्यालय :

भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी–91, निराला नगर,
लखनऊ, उ.प्र.–226020
दूरभाष: 0522-4001837,
0522-2789406
मो: 9450020514
E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in
web : www.bhaoraonyas.org

दिल्ली कार्यालय :

E-mail: bdsnyas.dl@gmail.com
मो : 9811068375

आलोकः प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक सहयोग राशि : रु 5000/-

जन्म- 1 दिसंबर 1916 पुण्यतिथि - 29 अगस्त 1998

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

देशप्रेम अरु प्रकृति प्रिय, कवि माहेश्वरी महान।
बच्चों के साहित्य सृजन, में उत्तम मतिमान।।
तनमन सुन्दर अमर कवि, कीर्तिमान छविधाम।
श्रद्धा से हम सब करें, वन्दन नमन प्रणाम।।

- शिव

सेवा संवाद के संरक्षक एवं आजीवन सदस्य

आपकी पत्रिका सेवा संवाद अब डिजिटल रूप में प्रकाशित करने का निर्णय न्यास द्वारा किया गया है। आप सभी से अनुरोध है कि डिजिटल संस्करण आपको नियमित मिलता रहे, उसके लिए अपना मोबाइल नंबर और ई-मेल आईडी जल्द से जल्द न्यास के ई-मेल आईडी –bdsnyas.dl@gmail.com पर प्रेषित करें।

पाठकों की कलम से - इस कॉलम के लिए पत्रिका के विषय में या भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों से सम्बंधित आपके अनुभव व सुझाव आमंत्रित हैं। अपना नाम, पता और मोबाइल भी जरूर दें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सहकार निवेदन

पिछले 29 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों का व्याप बढ़ाने के लिए न्यास के आय स्त्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित कार्पस फण्ड से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी इस कार्य में प्रयुक्त होती है। अतः लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं-

1. सचल चिकित्सा सेवा - रु. 11,000 की मासिक धनराशि का सहयोग करके एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. नेत्र चिकित्सा सेवा - रु. 5,000 की धनराशि का सहयोग कर एक मोतियाबिन्द पीड़ित नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर उसे नेत्र ज्योति प्रदान कराना।
3. विकलांग सहायता सेवा - रु. 1,000 से 6,000 तक की राशि दे कर एक विकलांग बन्धु की सहायता में उसके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, बैसाखी, ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. कार्पस फण्ड (स्थायी निधि)- रु. 10,000 से अधिक की धनराशि का अर्पण करके न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. छात्रवृत्ति- न्यास द्वारा जरूरतमंद छात्रों को वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है जिसमें आपका सहयोग अपेक्षित है। कक्षा के अनुसार छात्रवृत्ति इस प्रकार है - प्राथमिक : रु 3000, माध्यमिक (जू.हा.) : रु 5,000, हाईस्कूल : रु 7,000, इण्टरमीडिएट : रु 8,000, आई.टी.आई./डिप्लोमा एवं स्नातक : रु 10,000, परास्नातक : रु 12,000, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु : रु 15,000, इंजीनियरिंग : रु 18,000 और मेडिकल : रु 20,000।
6. सेवा चेतना (अर्द्धवार्षिक पत्रिका) - रु. 2,000 की आजीवन (10 **वर्षीय**) सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. सेवा संवाद (मासिक) - रू. 2,000 की 12 **वर्षीय** एवं रु. 5,000 की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. माधव सेवा आश्रम - रु. 5,00,000 का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।
9. विश्राम सदन दिल्ली - दिल्ली में एम्स के निकट न्यास द्वारा संचालित विश्राम सदन में प्रति बेड के लिए वार्षिक रु. 21,000 की कमी रहती है जिसके लिए सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक बेड के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
10. देवभूमि ऋषिकेश में प्रस्तावित **माधव सेवा विश्राम सदन** के भवन निर्माण हेतू अधिकाधिक सहयोग अपेक्षित है।
11. अक्षय सेवा - दिल्ली में एम्स एवं दो अन्य अस्पतालों के निकट दोपहर में होने वाले भोजन वितरण के लिए रु. 6,000 (प्रतिदिन/प्रति अस्पताल) की सहायता राशि अपेक्षित है। आप एक या अधिक दिनों के लिए राशि प्रेषित कर सकते हैं।
12. CSR फंड - यदि आपकी फर्म CSR में भी दान करती है तो कृपया न्यास से फोन या ईमेल द्वारा सम्पर्क करें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। प्रत्येक दानदाता को अपना पता व पैन बताना अनिवार्य है। साथ ही आपसे अनुरोध है कि आप एक पत्र भी भेजें कि आप यह राशि न्यास को दान के रूप में दे रहे हैं। समाज के सेवा-कार्यों हेतु अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दानराशि भेजने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं :

- चेक व ड्राफ्ट द्वारा जो, **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में **लखनऊ या दिल्ली** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेजें।
- अप्रवासी भारतीय भी FCRA के अन्तर्गत दान दे सकते हैं। उसके लिए फोन या मेल द्वारा सम्पर्क करें।
- दान की राशि आप सीधे न्यास के खाते में भी जमा कर पैन नं., फोन नं. व पते के साथ सूचित कर सकते हैं।
  - बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ - खाता सं. 6806100009948 (IFSC : BKID0006806)
  - भारतीय स्टेट बैंक, डालीगंज, लखनऊ - खाता सं. 30448433657 (IFSC : SBIN0003813)
  - भारतीय स्टेट बैंक, सफदरजंग एंक्लेव, नई दिल्ली - खाता सं. 41171580896 (IFSC : SBIN0013182)

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

अपनी बात

कहते हैं कि मानव मन इच्छाओं का पुलिन्दा है। इन इच्छाओं को तृप्त करने के लिए ईश्वर ने हमें बहुत सारे संसाधन तथा पदार्थ प्रदान किये हैं। मानव मन की इन इच्छाओं को ही काम और इन कामनाओं को तृप्त करने वाले साधनों को अर्थ कहते हैं। काम और अर्थ, इन्हीं दो पैरों पर विश्व खड़ा हुआ है। यदि हर किसी की सभी इच्छायें संतुष्ट की जाएँ तो विरोध का बखेड़ा खड़ा हो जाएगा। अतः उनको नियंत्रित करने के लिए ईश्वर प्रदत्त तत्त्व भी है जिसे धर्म कहा जाता है। सबका लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। हम इस पृथ्वी पर जन्म लेते हैं तथा जन्म से मृत्यु पर्यन्त हमारी दिनचर्या, क्रियाकलाप आदि की यात्रा ही जीवन है।

हम यहाँ इस संसार में सदा के लिए रहने नहीं आए हैं। आज से पूर्व भी हमारे बहुत से जन्म हो चुके थे और बाद में भी होंगे। जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति ही हमारी जीवन यात्रा का लक्ष्य अर्थात मोक्ष है। सभी मार्ग और पगडण्डियाँ तथा मोड़, अन्ततः मोक्ष की ओर ले जाते हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी मार्गों से हमें अपना रास्ता स्वयं ही चुनना होता है। यात्रा भी हमें स्वयं को ही करनी होती है। किसी भी प्रकार की मोह, ममता धन दौलत या कोई पूंजी हमारे किसी काम की नहीं क्योंकि ये हमारी आत्मा की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। दूसरों का प्यार, धन आदि एक सीमा से अधिक हमारी मदद नहीं कर सकता। इस संबंध में एक उदाहरण - पाँचों पाण्डव स्वर्गारोहण पर एक साथ गये परन्तु एक को छोड़ सभी एक-एक कर मार्ग में गिर गये। केवल धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने ही कुत्ते के साथ यात्रा पूरी की। इस पथ पर परलोक के लिए अकेले ही जाना पड़ता है। इससे कोई बच नहीं सकता। अतः हमारे समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में सहायता मिले और वह अपने तरीके से जी सके तथा अपने तरीके से ही मर सके। कोई दूसरे की तरह न तो हम जी सकते हैं और न दूसरे के तरीके से मर ही सकते हैं; चाहे इसके लिए कितना भी प्रयत्न क्यों न हो। यह यात्रा अनुकूल वातावरण से सरल हो जाती है।

सृष्टि में परिवर्तन करने का न तो हमारा अधिकार है और न हममें इतनी सामर्थ्य है। कहते हैं कि भौतिक माया-मोह में पड़े बिना ईश्वर की सतत रूप से आराधना और निष्कपट भाव से किसी स्वार्थ के बगैर ईश्वर के प्रति सेवारत होना जीव को उच्चतम अवस्था में ले जाता है। इस संसार में किसी स्वार्थ व दिखावे के बगैर सभी में ईश्वर के अंश का दर्शन कर परमात्मा की सेवा में रहने का भाव रखकर समाज के असहाय, निर्धन और रोगी आदि की सहायता, बाढ़, दुर्भिक्ष और दुर्घटनाओं आदि पर अवसर प्राप्त आध्यात्मिक दृष्टि से की गई सेवा मनुष्य निर्माण के रूप में प्रतिपादित होती है। कोई व्यक्ति, संगठन अथवा समाज किसी को सेवा के प्रति अवसर प्रदान कर, मानव निर्माण कर मोक्ष प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। सेवा ही एक ऐसा तत्व है जो हमें नर से नारायण बनाता है। अस्तु सेवाभावी बनने की सद्भावना के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

@ शिव

अनमोल वचन

जिस मनुष्य ने संसार में मान-बड़ाई और प्रतिष्ठा का त्याग कर दिया, वही महात्मा है और वही देवता और ऋषियों द्वारा पूजनीय है। साधु-महात्मा तो बहुत लोग कहलाते हैं पर उनमें मान-बड़ाई और प्रतिष्ठा का त्याग करने वाला कोई विरला ही होता है।

महामना शिक्षण संस्थान

महामना शिक्षण संस्थान (भाऊराव देवरस सेवा न्यास) के वर्ष 2022 के JEE(Mains)/NEET परीक्षा में सफल छात्र/छात्राओं का विवरण संलग्न है। अभी counselling की प्रक्रिया चल ही रही है और अंतिम चक्र तक कुछ विद्यार्थियों के कॉलेज/ branch आगे भी upgrade होने की उम्मीद है।

सरकारी इंजीनियरिंग संस्थान वर्ष 2022 में चयनित बालक

सं	छात्र	संस्थान का नाम	शाखा का नाम
1	सचिन कुमार	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) हमीरपुर	इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
2	विपिन कुमार	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) हमीरपुर	मैकेनिकल इंजीनियरिंग
3	सात्विक बाजपेयी	इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान (आईईटी), एकेटीयू लखनऊ	इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
4	अजय कुमार	हरकोर्ट बटलर तकनीकी विश्वविद्यालय (एचबीटीयू) कानपुर	केमिकल इंजीनियरिंग
5	विशाल गुप्ता	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमएमएमयूटी) गोरखपुर	मैकेनिकल इंजीनियरिंग
6	विकास निषाद	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमएमएमयूटी) गोरखपुर	मैकेनिकल इंजीनियरिंग
7	प्रशांत यादव	मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमएमएमयूटी) गोरखपुर	मैकेनिकल इंजीनियरिंग
8	अभिषेक मिश्रा	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड रूरल टेक्नोलॉजी (आईईआरटी) इलाहाबाद	इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग
9	संदेश सिंह	इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड रूरल टेक्नोलॉजी (आईईआरटी) इलाहाबाद	इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग

वीरेंद्र कुमार ने NEET में 720 में से 622 अंक प्राप्त किए हैं। उम्मीद है कि वह या तो आरएमएल मेडिकल कॉलेज लखनऊ या जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज कानपुर में प्रवेश पा सकता है।

बहुत ही हर्ष का विषय है कि 2 बालिकाएँ सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पाने में सफल हुई हैं तथा 2 बालिकाएं निजी कॉलेज में भी चयनित हुई हैं। बालिका प्रकल्प की टीम को बहुत बहुत शुभ कामनाएँ। यह सब आप सभी के निरंतर सहयोग और आशीर्वाद से ही सम्भव हो सका है। इसके लिए आप सभी को हृदय से आभार और धन्यवाद।

सरकारी इंजीनियरिंग संस्थान में वर्ष 2022 में चयनित बालिकाएं

1	दिव्या त्रिवेदी	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) श्रीनगर	सूचना प्रौद्योगिकी
2	नीतू यादव	डॉ. अम्बेडकर प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर	इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संचालित महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प के तृतीय बैच की छात्राएं माल एवेन्यू, लखनऊ स्थित छात्रावास में अपनी पढ़ाई सुचारू रूप से कर रही हैं। द्वितीय बैच की छात्राओं को पूर्व की भांति आनलाइन सहयोग उपलब्ध कराया जा रहा है। दिनांक 13 नवम्बर को महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प की छात्राओं के लिए व्यक्तित्व विकास सत्रों की श्रृंखला में PD Session का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "आर्थिक समृद्धि ही प्रसन्नता का मानक नहीं हो सकती"। इसमें 2021 एवं 2022 बैच की छात्राओं ने भाग लेते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।

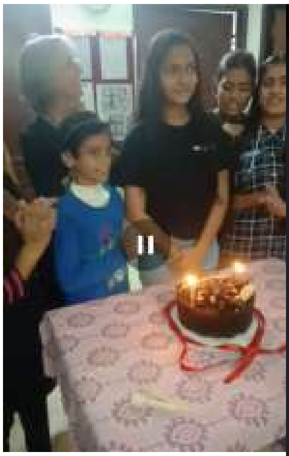

छात्रावास में सभी बालिकाएं एक परिवार की तरह रहती हैं, जहां उनकी खुशियों में शामिल होते हुए परिवार की तरह ही उनका जन्मदिन इत्यादि मनाया जाता है। इसी क्रम में 22 नवंबर को रायबरेली की आयुषी का जन्मदिन बहुत उत्साह के साथ मनाया गया।

प्रथम बैच की छात्राओं दिव्या त्रिवेदी व नीतू यादव को क्रमश: NIT Shrinagar (Information Technology) तथा AITH, Kanpur (Electronics) branch में प्रवेश मिल चुका है, जिनकी फीस का भुगतान प्रकल्प की ओर से किया गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

इनका असली नाम मुंशीराम विज था। सन् 1917 में उन्होंने सन्यास धारण कर लिया और स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए। वे भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता सेनानी तथा आर्यसमाज के संन्यासी थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार किया। वे भारत के उन महान राष्ट्रभक्त सन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज्य, स्त्री-शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की और हिन्दू समाज व भारत को संगठित करने तथा 1920 के दशक में शुद्धि आन्दोलन चलाने में महती भूमिका अदा की। डॉ भीमराव अम्बेडकर ने सन 1922 में कहा था कि श्रद्धानन्द अछूतों के "महानतम और सबसे सच्चे हितैषी" हैं।

सन् 1919 में स्वामी जी ने दिल्ली में जामा मस्जिद क्षेत्र में आयोजित एक विशाल सभा में भारत की स्वाधीनता के लिए प्रत्येक नागरिक को पांथिक मतभेद भुलाकर एकजुट होने का आह्वान किया था। कट्टरपंथी मुस्लिम तथा ईसाई हिन्दुओं का मतान्तरण कराने में लगे हुए थे। स्वामी जी ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मलकान राजपूतों सहित असंख्य व्यक्तियों को आर्य समाज के माध्यम से पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कराया। उन्होंने गैर-हिन्दुओं को पुनः अपने मूल धर्म में लाने के लिये शुद्धि नामक आन्दोलन चलाया और बहुत से लोगों को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। 23 दिसम्बर 1926 को नया बाजार स्थित उनके निवास स्थान पर अब्दुल रशीद नामक एक उन्मादी ने धर्म-चर्चा के बहाने उनके कक्ष में प्रवेश करके गोली मारकर इस महान विभूति की हत्या कर दी।

अक्षय सेवा प्रकल्प - दिल्ली

न्यास की योजना से संचालित अक्षय सेवा प्रकल्प पिछले 2000 से अधिक दिनों से दिल्ली के 3 अस्पतालों के निकट दोपहर का भोजन वितरित कर रहा है। इस माध्यम से लगभग 2000 लोग लाभान्वित होते हैं। समय समय पर अपने घर के मंगल प्रसंगों एवं पूर्वजों की याद में भोजन वितरण हेतु लोगों का आना होता रहता है। इसी कड़ी में दिनांक 1 नवम्बर को डॉ नीतू सांघवी गर्ग जी का आगमन हुआ। उन्होंने अपने दिवंगत माता पिता की याद में अपने हाथों से भोजन वितरण किया। उनके साथ श्रीमती सुशीला किला जी भी उपस्थित रहीं।

भोजन वितरण के पश्चात डॉ नीतू और श्रीमती किला जी विश्राम सदन का अवलोकन करने हेतु भी आईं। वहां उन्होंने सदन में रह रहे मरीजों के सहायकों से भी बातचीत की और न्यास द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी भी ली।

ऐसे लोगों का आगमन अक्षय सेवा प्रकल्प और न्यास के कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्धन करता है। न्यास और प्रकल्प के सभी पदाधिकारियों की ओर से डॉ नीतू सांघवी गर्ग जी और श्रीमती सुशीला किला जी का हृदय से धन्यवाद।

सबसे बड़ा आत्मज्ञान

आत्मज्ञान की खोज में आये एक युवक को एक स्वामी जी ने बागबानी में सहयोग का काम दे दिया। उसे अटपटा लगा जो स्वामी जी के एक शिष्य ने भाँप लिया और कहा, "हम यह मानते हैं कि पेड़-पौधे, जीव-जंतु, मनुष्य, परिवार, यह सब ईश्वर का ही रूप हैं और इन सबकी सेवा ही ईश्वर की सेवा है।" उस युवक को सबसे बड़ा आत्मज्ञान मिल गया था।

समर्थ भारत - दिल्ली

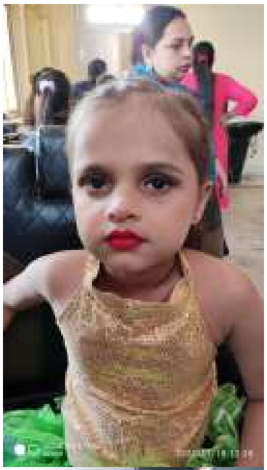

ब्यूटी बैच का प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ – इस माह दो केन्द्रों में ब्यूटी के नए बैच का प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ। दिनांक 1 नवम्बर से कड़कड़डूमा केंद्र में 25 प्रशिक्षार्थियों के साथ तथा दिनांक 14 नवम्बर से टैंकरोड, करोलबाग़ में 23 प्रशिक्षार्थियों के साथ।

कड़कड़डूमा प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के तीसरे बैच का प्रशिक्षण 1 नवम्बर को प्रारंभ हुआ जो कि तीन माह के पश्चात 31 जनवरी 2023 को पूर्ण होगा। इस बैच में 25 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण श्रीमती निधि दीक्षित जी के द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह प्रथम माह का प्रशिक्षण दिया गया है जिसमे निम्न विषय कवर किये गए हैं – वेक्स, हेयर कट, बालदिवस उत्सव, बेबी मेकअप, हेयर स्टाइल, अल्ट्रासोनिक फेसिअल, केराटीन, इंडिया गेट विजिट आदि।

टैंक रोड, करोलबाग़ प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के तीसरे बैच का प्रशिक्षण दिनांक 14 नवम्बर को प्रारंभ हुआ जो की तीन माह के पश्चात 3 फरवरी 2023 को पूर्ण होगा। इस बैच में 23 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण श्रीमती शालिनी चौहान जी के द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह प्रथम माह का प्रशिक्षण दिया गया है जिसमें निम्न विषय कवर किये गए हैं – प्रेसिंग और क्रिम्पिंग, फेस मसाज, आईब्रो सेटिंग आदि।

मालवीय नगर प्रशिक्षण केंद्र गतिविधियाँ – ब्यूटिशियन कोर्स - इस केंद्र पर ब्यूटिशियन के तीसरे बैच का प्रशिक्षण 5 सितंबर को प्रारंभ हुआ था जो कि तीन माह के पश्चात 4 दिसम्बर को पूर्ण होगा। इस बैच में 23 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण सुश्री अंजली जी के द्वारा दिया जा रहा है। प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपरांत सभी को KVIC के द्वारा प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा। इस माह अंतिम माह का प्रशिक्षण दिया गया है जिसमें निम्न विषय कवर किये गए हैं – मेनीक्योर, साड़ी ड्रेपिंग, हेयर पर्मिंग, मेकअप, स्मूथिंग, हेयर रीबोंडिंग, हेयरकट, आई मेकअप, आई लाइनर, आइब्रो मेकअप, नेल आर्ट, हेयर स्टाइल, स्टूडेंट फीडबैक आदि।

प्रशिक्षण केंद्र उद्घाटन – इस माह दो नए केन्द्रों का उद्घाटन हुआ है |

दक्षिणी दिल्ली INA (दिल्ली हाट) में दिनांक 9 नवम्बर को उद्घाटन हुआ। इस कार्यक्रम में श्रीमान सुभाष जी ने अपनी धर्म पत्नी के साथ पूजन और हवन किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दिल्ली के प्रांत कार्यवाह श्रीमान भारत भूषण जी, सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्रीमान रमेश अग्रवाल जी, Nextra डेवलपर्स के एमडी श्रीमान निखिल बंसल जी के साथ अन्य गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति भी रही। साथ ही समर्थ भारत की प्रांतीय टोली के सदस्य तथा समर्थ भारत के प्रशिक्षण केंद्रों में प्रशिक्षण ले चुके भैया, बहनें और प्रशिक्षक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कुल उपस्थिति 35 लोगों की रही।

सिग्नेचर ब्रिज, यमुनापार में हिन्दू शरणार्थी बस्ती पाकिस्तान से विस्थापितों के बीच दिनांक 10 नवम्बर को सायं 6:30 बजे साध्वी समताश्री जी के करकमलों द्वारा इस केंद्र का उद्घाटन हुआ। शिक्षक श्री सागर जी ने 15 शिक्षार्थियों की कक्षा का 10 मिनट का सराहनीय प्रदर्शन भी किया। इस अवसर पर एक दानदाता ने 2 हजार रूपए प्रति मास देने का वचन दिया। एक युवा दानदाता ने कहा कि यहां के 20 लोगों को ड्राइविंग का कोर्स यदि समर्थ भारत सिखाए तो प्रशिक्षण और लाइसेंस बनाने तक का खर्च वो स्वयं वहन करेंगे। कार्यक्रम में साध्वी समताश्री जी का आशीर्वाद और वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री स्वदेशपाल गुप्ता का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

"रोजगार जागरूकता शिविर" - मीराबाग सेवा बस्ती में 9 नवम्बर को सायम् 6 बजे रोजगार जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। आयोजन समर्थ भारत के तत्वावधान में और KVIC के मार्गदर्शन में हुआ जिसमें विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। युवाओं को स्वरोजगार की ओर प्रेरित किया गया, उन्हें लोन और सब्सिडी की भी जानकारी दी गई। युवाओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिये गए। कार्यक्रम में कुल 60 की संख्या रही जिसमें 29 युवतियां भी थीं। मुख्य वक्ता KVIC के डिप्टी डायरेक्टर श्री

सुरेश छिकारा तथा समर्थ भारत के सह संयोजक श्री राकेश कुमार ने सबका मार्गदर्शन किया।कार्यक्रम में केशवपुरम विभाग संरक्षक श्री संदीप ठक्कर, कार्यालय प्रमुख श्री अर्नतदीप जी तथा संघ के कार्यकर्त्ता श्री सुरेश जी भी उपस्थित हुए। बाद में सबको जलपान भी कराया गया।

NSDC के द्वारा मूल्यांकन – दिनांक 24 नवम्बर को हमारे केन्द्रों पर पूर्ण हो चुके GST & Tally कोर्स के प्रशिक्षार्थियों का NSDC के द्वारा पहाड़गंज केंद्र पर मूल्यांकन किया गया जिसमें 14 प्रशिक्षार्थी उपस्थित रहे। मूल्यांकन में पास होने वाले प्रशिक्षार्थियों को NSDC की तरफ से प्रमाणपत्र मिलेगा।

रामानुजन कॉलेज में कार्यशाला – दिनांक 29 नवम्बर को रामानुजन कॉलेज में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें समर्थ भारत की तरफ से श्रीमान शोनाल गुप्ता जी का मुख्य वक्ता के रूप में जाना हुआ। कार्यशाला का विषय था - **Problem Solving & Ideation.** इसमें कुल 112 कॉलेज विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्य का प्रतिफल

GST & Tally Course – हमारे सैनिक फार्म संगम विहार केंद्र से दो माह का प्रशिक्षण पूर्ण कर दो प्रशिक्षार्थी विभिन्न संस्थानों में कार्य करके अपनी आजीविका चला रहे हैं। विवरण निम्नवत है –

1. पूजा यादव – चार्टर्ड कंपनी – अकाउंट असिस्टेंट – मासिक आय 10,000/- रुपये
2. सोनू – परफेक्ट फाइनेंस, ग्रीन पार्क – अकाउंट असिस्टेंट – मासिक आय 10,000/- रुपये

अमर शहीद सरदार उधमसिंह

शहीद उधमसिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित हुए जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। इस घटना से वीर उधमसिंह तिलमिला गए और उन्होंने माइकल ओ'डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए वे सन् 1934 में लंदन पहुँचे और वहां पर वे 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर रहने लगे। वहां उन्होंने अपना ध्येय को पूरा करने के लिए छह गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत का यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ'डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगा।

उधम सिंह को बदला लेने का मौका 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ'डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए। अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ'डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। 4 जून 1940 को उन्हें हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई।

माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश

गत 10 नवम्बर को माधव सेवा विश्राम सदन, ऋषिकेश के प्रकल्प प्रमुख श्री संजय गर्ग जी और इस भवन की मुख्य वास्तुकार श्रीमती कीर्ति जी का आगमन निर्माण स्थल पर हुआ। उन्होंने वहां चल रहे निर्माण कार्य का निरीक्षण किया और निर्माण कार्य में लगे प्रमुख कार्यकर्ताओं को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर ऋषिकेश के मा. जिला संघचालक श्री सुदामा जी और निर्माण कार्य के ठेकेदार श्री रामकुमार जी भी उपस्थित थे।

11 नवम्बर को निर्माणाधीन विश्राम सदन का अवलोकन करने न्यास के विशेष आमंत्रित सदस्य श्री सुधीर मोहन मित्तल और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती दीप्ति मित्तल जी के साथ उपस्थित थे। उनके साथ सैन डियागो से आये श्री सुदेश कुमार और बंगलौर से श्रीमती गीता गुप्ता भी उपस्थित रहीं।

19 नवम्बर को लखनऊ से न्यास के न्यासी श्री अश्वनी गुप्त जी का आगमन हुआ। निर्माण कार्य की प्रगति की सभी महानुभावों ने बहुत प्रशंसा की और संतोष व्यक्त किया। आशा है कि आप सभी का ऐसा ही स्नेह पूर्ण आशीर्वाद इस प्रकल्प को आगे भी मिलता रहेगा।

आपका सहकार

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूजनीय माधव राव जी गोलवलकर की स्मृति में देवभूमि ऋषिकेश में एम्स अस्पताल के निकट माधव सेवा विश्राम सदन की स्थापना प्रस्तावित है। इस सदन का उपयोग साधु संतों, एम्स ऋषिकेश में उपचार के लिए आने वाले रोगियों व उनके सहायकों द्वारा किया जाएगा। यह कार्य आपका अपना ही है, इसे अनुभव करते हुए आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप उदार हृदय से इस सेवा प्रकल्प हेतु यथा संभव सहयोग करें। आपके द्वारा दी गई राशि 80-G के अंतर्गत छूट प्राप्त है। आप CSR फंड के अंतर्गत भी सहयोग कर सकते हैं। आपका यही सहयोग निर्मित होने वाले इस विश्राम सदन के शीघ्रातिशीघ्र साकार रूप लेने में सहायक होगा।

आपके परिवार में सुख-समृद्धि के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय स्टेट बैंक, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली

A/C: 40692412361
IFSC : SBIN0000625

आर्थिक सहयोग के लिए आवश्यक जानकारी :

MCA में न्यास की CSR पंजीकरण संख्या **CSR00004454**
80G में न्यास की पंजीकरण संख्या **AAATB1049GF20217**
न्यास की FCRA पंजीकरण संख्या **136550134**

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प अपने स्थापना काल से ही चिकित्सा सेवा के अनेक कार्यक्रम संचालित करता है जिसमें प्रमुख रूप से समाज के निर्बल वर्ग हेतु नेत्र चिकित्सा शिविर, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, दिव्यांग बंधुओं के हितार्थ उपकरण वितरण शिविर का आयोजन लखनऊ महानगर एवं निकट के जनपदों में करता है। वर्तमान में संस्था द्वारा लखनऊ महानगर में 6 स्वास्थ्य केंद्र एलोपैथ चिकित्सा विधि और 2 केंद्र होम्योपैथ विधि द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। इन केन्द्रों के माध्यम से लाभान्वित होने वाले रोगियों की मासिक संख्या 1200 के लगभग रहती है।

माधव देवड़े रूग्ण सेवा केंद्र में होम्योपैथिक चिकित्सक रोगियों से उसकी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों की जानकारी लेते हुए

बिन्दौवा मोहन लाल गंज स्वास्थ्य केंद्र में अपना पंजीकरण कराते हुए रोगी

माधव देवड़े रूग्ण सेवा केंद्र में अपना पंजीकरण कराते हुए रोगी

माधव देवड़े रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम, में अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराते हुए रोगी

पावन स्मृति - नवम्बर

पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा की और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया,अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं ऐसे उन सभी दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित हैं।

दिनांक	दिवस	महापुरूष का नाम
1 दिसम्बर	जन्म-दिवस	हिन्दी गीतकार द्वारिका प्रसाद महेश्वरी
3 दिसम्बर	जन्म-दिवस	भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद
10 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	सोना खान का हुतात्मा वीर नारायण सिंह
12 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	लद्दाख का महान सेनापति - जनरल जोरावर सिंह
15 दिसम्बर	इतिहास स्मृति	राष्ट्रीय अपमान का बदला - साण्डर्स वध
19 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	काकोरी काण्ड के नायक पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल
19 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	काकोरी काण्ड का बलिदानीः अशफाक उल्ला खाँ
22 दिसम्बर	जन्म-दिवस	महान् गणितज्ञ श्री श्रीनिवास रामानुजन्
23 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	परावर्तन के अग्रदूत स्वामी श्रद्धानन्द
23 दिसम्बर	पुण्य-तिथि	विस्मृत विप्लवी गणेश घोष
24 दिसम्बर	जन्म-दिवस	खान अब्दुल गफ्फार खाँ - सीमान्त गाँधी
25 दिसम्बर	जन्म-दिवस	पं० मदनमोहन मालवीय व मा. अटल बिहारी वाजपेयी
26 दिसम्बर	बलिदान दिवस	वीर बाल दिवस - वीर जोरावर सिंह व फ़तेह सिंह का बलिदान
27 दिसम्बर	जन्म-तिथि	काकोरी काण्ड का क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ बख्शी
28 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	राव रामबख्खा सिंह का बलिदान
29 दिसम्बर	जन्म-दिवस	संत सिपाही गुरु गोविन्द सिंह जी
30 दिसम्बर	बलिदान-दिवस	मेघालय का क्रान्तिकारी वीर उक्यांग नागवा

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (1 दिसंबर 1916 - 29 अगस्त 1998)

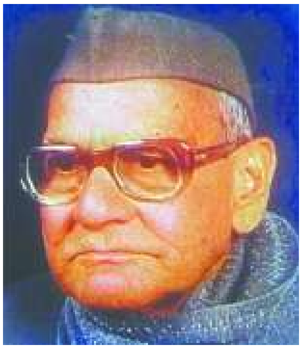

द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी का जन्म रोहता गांव (जिला आगरा) में हुआ था। आपकी शिक्षा आगरा में ही हुई। इसके बाद शिक्षा विभाग में ही विभिन्न शहरों में सेवाएं दीं। 1978 में सेवानिवृत्त होने के बाद अपने पैतृक गांव आ गए। 1981 में आलोक नगर में आकर बस गए। आपका लेखन विद्यार्थी जीवन से शुरू हो गया था लेकिन सेवानिवृत्त होने पर आपने और अधिक साहित्य सृजन किया। हिन्दी भाषा के प्रमुख कवि और लेखक थे। शिक्षा और कविता को समर्पित द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जीवन बहुत ही चित्ताकर्षक और रोचक है। उन्होंने बाल साहित्य पर 26 पुस्तकें लिखीं। इसके अतिरिक्त पांच पुस्तकें नवसाक्षरों के लिए लिखीं। उन्होंने अनेक काव्य

संग्रह और खंड काव्यों की भी रचना की। बच्चों के कवि सम्मेलन का प्रारंभ और प्रवर्तन करने वालों के रूप में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का योगदान अविस्मरणीय है। वह उत्तर प्रदेश के शिक्षा सचिव थे। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रसार और स्तर के उन्नयन के लिए अनथक प्रयास किए।

बाल साहित्य में आपको विशेष महारत थी। इसी का परिणाम था कि बाल साहित्य के जानेमाने लेखक कृष्ण विनायक फड़के ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में अपनी शवयात्रा में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' गाये जाने की इच्छा जताई थी। द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने अपनी आत्मकथा 'सीधी राह चलता रहा' अपनी मृत्यु से केवल दो घंटे पहले ही पूरी की थी। इस आत्मकथा के पूरे होने के दो घंटे पश्चात ही 29 अगस्त 1998 को आपकी हालत बिगड़ी और आपका निधन हो गया। बाद में आपके बेटे डॉ० विनोद कुमार माहेश्वरी ने आपकी आत्मकथा संपादित कर पूरी की।

श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी (25 दिसंबर 1924 – 16 अगस्त 2018)

भारतीय इतिहास में तीन बार के प्रधानमंत्री रहने वाले अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म मध्य प्रदेश जिले के ग्वालियर के एक गांव में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था (पैतृक गांव – बटेश्वर)। उनके पिता स्व. कृष्ण बिहारी वाजपेयी एक शिक्षक और एक कवि भी थे। उनकी माता का नाम कृष्णा देवी वाजपेयी था। वाजपेयी जी ने अपनी हाई स्कूल की शिक्षा सरस्वती शिक्षा मंदिर, गोरखी, बाड़ा, विद्यालय से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने स्नातक की शिक्षा लक्ष्मीबाई कॉलेज से पूरी की और विधि स्नातक की डिग्री उन्होंने कानपुर में स्थित डीएवी (DAV) कॉलेज से अर्थशास्त्र विषय में ली। अटल जी छात्र जीवन से ही राजनीतिक तथ्यों से संबंधित वाद विवाद में हिस्सा लेना पसंद करते थे और हमेशा ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहते थे। आगे चलकर सन् 1939 में वे संघ से जुड़े।

अटल जी आजीवन अविवाहित रहे। आजादी की लड़ाई में वे अनेक नेताओं के साथ मिलकर लड़े। भाषण देने की अद्भुत कला के उनके विरोधी भी प्रशंसक थे। विभिन्न परिस्थियों में उनके विचारों का सत्तारूढ़ दल भी सम्मान करता था। देश के प्रधानमन्त्री के पद पर आसीन होने के बाद पोखरण विस्फोट, कारगिल विजय, स्वर्णिम चतुर्भुज, नदियों को जोड़ना, आधार कार्ड, सर्व-शिक्षा अभियान, आदि अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

अटल जी मासिक पत्रिका "राष्ट्रधर्म" और साप्ताहिक पत्र पांचजन्य के प्रथम सम्पादक थे। पत्रकारिता छोड़कर राजनीति में पूरी तरह रम जाने और राजनीतिक ऊँचाईयाँ चढ़ने के बाद भी न केवल उनकी दृष्टि और लेखनी की धार पैनी बनी रही बल्कि पत्रकारिता के तमाम पहलुओं पर वह चिंतन भी करते थे। वे मानते थे कि सम्पादक को समाज के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। प्रधानमन्त्री के पद पर रहते हुए अपनी अति-महत्वपूर्ण योजना "सर्व-शिक्षा अभियान" का एक प्रसिद्ध गीत "स्कूल चलें हम" आपने ही लिखा था।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास की स्थापना के समय उसके अध्यक्ष पद पर रहते हुए उसके सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने में आपका प्रमुख योगदान रहा। लम्बी बीमारी के पश्चात 16 अगस्त 2018 को दिल्ली के एम्स अस्पताल में उन्होंने आखिरी सांस ली। यह दिन हमारे देश के सभी देशवासियों के लिए अत्यंत क्षति वाला दिन था। आज भी अटल जी द्वारा दिए गए भाषण, लिखी गयी किताबें, कविताओं और प्रधानमंत्री रहते हुए किये गए कामों आदि द्वारा उन्हें सम्मान के साथ याद किया जाता है।

पंडित मदनमोहन मालवीय (जन्म- 25 दिसम्बर, 1861 ; मृत्यु- 12 नवम्बर, 1946)

मालवीय जी महान् स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ और शिक्षाविद ही नहीं, बल्कि एक बड़े समाज सुधारक भी थे। हिन्दू राष्ट्रवाद के समर्थक मदन मोहन मालवीय देश से जातिगत बेड़ियों को तोड़ना चाहते थे। इनके पिता संस्कृत के विख्यात विद्वान् पण्डित ब्रजनाथ थे और माता का नाम भूनादेवी था। उन्होंने दलितों के मन्दिरों में प्रवेश निषेध की बुराई के ख़िलाफ़ देशभर में आंदोलन चलाया। उन्होंने पत्रकार के रूप में अपनी जीवनवृत्ति की शुरुआत वर्ष 1887 में की। वे हिंदी दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक बने। फिर वर्ष 1889 में वे 'इंडियन ओपिनियन' के संपादक बने। उनकी कविताएँ 'मकरंद' नाम से प्रकाशित होती थीं। इलाहाबाद जिला न्यायालय में वकालत शुरू की। परंतु, उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में हिस्सा लेने के उद्देश्य से अपनी वकालत को छोड़ दिया। मालवीय जी 1909 और 1918 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने। अप्रैल 1911 में एनी बेसेन्ट मालवीय जी से मिलीं और उन लोगों ने वाराणसी में एक हिंदू विश्वविद्यालय के लिए काम करने का निर्णय लिया। इस प्रकार 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' (बी.एच.यू.) सन् वर्ष 1916 में स्थापित हुआ। उस समय की घोर विपरीत परिस्थियों में भी धैर्य पूर्वक यह असंभव सा लगने वाला कार्य प्रारम्भ किया। इसके लिए आवश्यक धन की व्यवस्था अपनी सूझ-बूझ से की। आज इस विश्वविद्यालय की गिनती महत्त्वपूर्ण भारतीय विश्वविद्यालयों में की जाती है।

महान पंडित मदन मोहन मालवीय जी का जीवन करोड़ों भारतीयों के लिए प्रेरणादायक है और भारत सदा उनका ऋणी रहेगा। उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यो के सम्मान स्वरुप समाज ने उन्हें महामना की पदवी प्रदान की और वे महामना मदन मोहन मालवीय के नाम से प्रसिद्ध हुए।

25 दिसम्बर, 2014 को उनके 153वें जन्मदिवस पर मालवीय जी को सम्मानित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से विभूषित किया। राष्ट्र इस महान नेता को हमेशा याद रखेगा।

बोध कथा - श्रेष्ठ कर्म ही सच्चे साथी

उन दिनों गुरुनानकदेव लाहौर गये थे। वहाँ यह नियम था कि जिस व्यक्ति के पास जितने अधिक रुपये की सम्पत्ति होती थी, वह अपने घर के ऊपर उतने ही झण्डे लगाता था। दुनीचन्द उस समय लाहौर में सबसे अधिक धनी एवं समृद्ध व्यक्ति था। उसके पास लगभग बीस करोड़ रुपये की सम्पत्ति थी। उसके घर की छत पर रंग- बिरंगे बीस झण्डे लहरा रहे थे। दुनीचन्द सेठ भी एक दिन गुरुनानकदेव के दर्शन करने के लिये उनके पास आया और नतमस्तक होकर गुरुदेव से बोला- "महाराज! आज्ञा दीजिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" गुरुनानकदेव ने उसे एक सूई देकर कहा–"दुनीचन्द! इस सूई को ले जाओ और मुझे अगले जन्म में वापस कर देना।" दुनीचन्द अपनी धन- सम्पत्ति के अभिमान में गुरुदेव का अभिप्राय नहीं समझा और सूई लेकर घर लौट आया। चिन्तन के क्षणों में उसे कुछ ही समय बाद विचार आया कि वह सूई को अगले जन्म में कैसे वापस करेगा। मरकर वह इसे अपने साथ तो ले नहीं जा सकता। गुरुदेव ने अवश्य ही किसी विशेष अभिप्राय से यह सूई उसे दी है। वह उसी समय वापस आश्रम में लौटा और गुरुदेव को प्रणाम करके कहा, "महाराज! आपने जो सूई मुझे दी है, वह मैं आपको अगले जन्म में कैसे लौटा सकता हूँ? भला मरने के बाद भी कोई व्यक्ति किसी वस्तु को अपने साथ ले जा सकता है क्या? आप अपनी यह सूई अभी वापस ले लीजिये।" गुरुदेव दुनीचन्द की बात सुनकर मुसकराये और बोले- "दुनीचन्द! यदि तुम छोटी-सी सूई भी मरकर अपने साथ नहीं ले जा सकते, तो इतनी सारी दौलत जो तुमने इकट्ठी कर रखी है, कैसे साथ ले जाओगे?" गुरुदेव की बात से दुनीचन्द की आँखें खुल गयीं। उसे सच्ची सीख मिल गयी थी। उसने उसी क्षण अपनी सारी धन - सम्पत्ति अभावग्रस्त लोगों की सहायता में लगाने का निर्णय किया।

प्रस्तुति - श्रीप्रह्लाद वन गोस्वामी

विश्राम सदनों में नवम्बर-2022 में आने वाले नए रोगी व सहायक

क्र.स.	राज्य/देश	माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	KGMU, लखनऊ	विश्राम सदन, दिल्ली	IGIMS, पटना	एम्स, झज्जर	योग
1	जम्मू कश्मीर					4	4
2	हिमाचल प्रदेश			1		1	2
3	पंजाब	2		3		4	9
4	हरियाणा		2	14		226	242
5	दिल्ली	4		10		118	132
6	उत्तराखंड	13		10		19	42
7	उत्तर प्रदेश	1722	729	124	5	430	3010
8	बिहार	1210	33	196	2224	112	3775
9	झारखण्ड	107	2	19	30	16	174
10	सिक्किम						
11	नागालैंड						
12	असम			3			3
13	मणिपुर /मिजोरम						
14	अरुणाचल प्रदेश						
15	त्रिपुरा						
16	मेघालय						
17	प. बंगाल	12		26	7	8	53
18	ओडिशा/अंदमान	6		5		4	15
19	आंध्रप्रदेश/तेलंगाना			1			1
20	तमिलनाडु /पुदुच्चेरी						
21	कर्नाटक						
22	केरल				8		8
23	महाराष्ट्र /गोवा	4	2		1	1	8
24	मध्य प्रदेश	81		24		20	125
25	छत्तीसगढ़	9				1	10
26	गुजरात			3		1	4
27	राजस्थान		4	14		24	42
28	अन्य						
	पड़ोसी देश						
29	नेपाल	3		9	3	4	19
30	बांग्लादेश						
31	अन्य देश						
	योग (इस मास)	**3173**	**772**	**462**	**2278**	**993**	**7678**
	योग (अप्रैल 22 - मार्च 23)	**23795**	**6879**	**5266**	**16054**	**5472**	**57466**

RNIN-UPHIN/2005/15853

स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प - लखनऊ

लखनऊ और उसके आस पास दी जाने वाली चिकित्सा सेवाओं का विवरण

सेवा बस्ती में स्वास्थ्य केंद्र	नवम्बर	अप्रैल 22 से
वेदांत आश्रम पपनामऊ चिनहट	35	175
सेवा समर्पण संस्थान, बिन्दौवा	144	1110
51 शक्तिपीठ, बक्शी का तालाब	23	331
अम्बेडकर नगर	0	248
माधव सेवा आश्रम	8	102
माधवराव देवड़े स्मृति रूग्ण सेवा केंद्र		
एलोपेथिक	805	4154
होम्योपैथिक	320	2440
रूग्ण सेवा केंद्र, माधव सेवा आश्रम	245	1798
कुल लाभान्वित रोगी	1580	10358

नेत्र चिकित्सा (नवम्बर)

	देवड़े नेत्र चिकित्सालय लखनऊ	अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	योग (अप्रैल 2022 से)
नेत्र परीक्षण	587	2530	19617
चश्मा वितरण	313	1841	14002
मोतियाबिंद ऑपरेशन	30		48
Fundus Test	0	0	48
OCT Test	0	0	6
पैथोलॉजी	196	0	1530

आलोक : नेत्र एवं पैथोलॉजी जाँच केवल 20 रूपये के पंजीकरण शुल्क में उपलब्ध है

आप भी लिखें :- सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख (चित्र सहित), सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा संस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं सुझाव आदि सामग्री तथा सेवा संवाद के प्रकाशित अंकों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित कर हमारा मार्गदर्शन, सहयोग करने का कष्ट करें- सम्पादक।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास के प्रकल्प

प्रकल्प का नाम	संपर्क सूत्र	दूरभाष
स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प, लखनऊ	श्री ओ.पी. श्रीवास्तव	9839785395
माधव सेवा आश्रम, लखनऊ	श्री शरद जैन	9670077777
महामना शिक्षण संस्थान, लखनऊ	श्री रंजीव तिवारी	9731525522
महामना शिक्षण संस्थान बालिका प्रकल्प, लखनऊ	श्रीमती सीमा अग्रवाल	9335922353
सामाजिक विज्ञानं एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ	डॉ हरमेश चौहान	9450930087
विश्राम सदन, के.जी.एम.यू. , लखनऊ	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	9415003111
देवडे नेत्र चिकित्सालय, लखनऊ	श्री राजेश	9793120738
सेवा संवाद (मासिक), लखनऊ	डॉ शिवभूषण त्रिपाठी	9451176775
सेवा चेतना (अर्धवार्षिक), लखनऊ	डॉ विजय कर्ण	8887671004
विश्राम सदन, एम्स , दिल्ली	श्री राजीव गुगलानी	9810262200
अक्षय सेवा, दिल्ली	श्री रामअवतार किला	9811052464
समर्थ भारत, दिल्ली	श्री शोनाल गुप्ता	9811190016
भारतीय संस्कृति अध्ययन केन्द्र, दिल्ली	श्री गौरव गर्ग	9918532007
विश्राम सदन, आई. जी. आई. एम. एस., पटना	श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह	9431114457
विश्राम सदन, एम्स, झज्जर (हरियाणा)	श्री विकास कपूर	9818098600
माधव सेवा विश्राम सदन , ऋषिकेश	श्री संजय गर्ग	9837042952
अशोक सिंघल नेत्र चिकित्सा संस्थान, अयोध्या	डॉ सुशील उपाध्याय	9554966006

बुक पोस्ट
छपा-साहित्य

सेवा में,

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस सेवा न्यास सी-91, निराला नगर, लखनऊ-226020 के लिए नूतन ऑफसेट मुद्रण केंद्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226002 से मुद्रित, भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-91, निराला नगर, लखनऊ-262020 से प्रकाशित - सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी